''मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में नारी की वास्तविकता का अध्ययन''

*सरोज चौधरी

शोध सारांश

स्वतंत्रता काल के बाद मन्नू भण्डारी ने कथा साहित्य के क्षैत्र में अपना वर्चस्व रखा। समकालीन कहानी साहित्य क्षैत्र में कृष्णा सोब्ती, मजुला भगत, उषा प्रियंवदा ,चित्रा मुदगल ममता कालिया मृदुला गर्ग और मन्नू भण्डारी के नाम प्रमुखता से लिए जाते है। 1950 से 1960 के दशक में महिला लेखिकाओं मे मन्नू भण्डारी एक ऐसा ही प्रभावशाली नाम है। जिसने अपने लिखने के तरीके से अपना एक स्थान बनाया। हिन्दी साहित्य के माध्यम से सभी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। मन्नू भण्डारी हिन्दी साहीत्य जगत की जानी मानी रचनाकार हैं। उनकी रचनाओं को देश – विदेशी भाषाओं में समान से पढ़ी जाने वाली रचनाकार है। नारी के चरीत्र तथा व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति करने वाली मन्नू भण्डारी अपनी रचनाओं मे नारी की सामाजिक व पारिवारिक समस्याओं का चित्रण किया है।

मन्नू जी पहली ऐसी लेखिका है, जिन्होने मध्यवर्गीय शहरी व ग्रामीण स्त्री पात्रो के मन की पीड़ा को अभिव्यक्त किया है। मन्नू भण्डारी का जन्म 3 अप्रैल, 1931 में मध्य प्रदेश के जैन परीवार मे हुआ।

मन्नू का जन्म अजमेर के ब्रम्हापुरी मोहल्ले मे बिता पॉच संतानो मे सबसे छोटी मन्नू जी के पिता श्री सुख संपतराय भण्डारी अंग्रेजी हिन्दी शब्दकोश के निर्माता थे। उनके पिता संवेदनशील होने के साथ बेहद क्रोधी और अंहवादी थे। पिता के व्यक्तित्व का प्रभाव समय के साथ मन्नू के व्यक्तित्व पर पडा। अपनी आत्मकथ्य 'एक कहानी यह भी' में लिखती है।

समस्या कथन

बचपन से ही कहानियों को पढते सुनते आये हैं और कहानियॉ सुनना व पढ़ना रोमाचक ही लगता हैं। लेकिन मन्नू भण्डारी जी की कहानियों को पढ़ने से जो सिहरन मुझे हुई, जो पिड़ा मुझे हुई। उसी कारण से मैने उनकी कहानियों को अपने शोद्ध का विषय बनाने का मन बनाया।

आज से पहले नारी के अस्तित्व पर बहुत काम हो चुका हैं। आज भी नारी समाज में होने वाले असामाजिक शोषण की शिकार हैं। इतने वर्षो के बाद भी नारी कही ना कही मन्नू जी के कहानियों के पात्रों के रूप में वही खड़ी दिखाई देती हैं। आज भी हमारे मन में यह सवाल हैं कि क्या कारण हैं? नारी का शोषण आज भी हो रहा हैं जबकी आज हम 21 वीं सदी में सफर कर रहे हैं । हमारा देश कॅहा से कॅहा पहुॅच गया हैं। आज की नारी प्रत्येक क्षैत्र में अपनी योग्यता का ड़ंका बजा रही हैं फिर भी मन में वही सवाल हैं कि आज भी जब हम मन्नू जी की कहानियों का पढ़ते हैं तो अपने आप को भी उस पात्र की जगह पाते हैं यही नहीं अपनी दादी, नानी, मॉ, सास, बहन, ननद, देवरानी व भाभी सभी अपने आप को इस पिड़ा से नहीं बचा पाये तो फिर कारण क्या हैं ?

मन्नू जी की कहानियो से लेकर आज तक नारी पात्र अपनी उस जगह को अपने वजुद को क्यो नहीं बदल पाई।

आज जिन्होनें अपना वजूद बनाया हैं वो भी उस कहानी पात्र की पिड़ा से किसी ना किसी स्थिती से गुजरे है उनका जिवन, कहानियॉ, उपन्यास, नाटक इन सब को पढ़ने से सुनने से ऐसा लगता हैं जैसे हम उनसे मिल चुके हैं उनको नजदीक से जानते हैं यही अहसास मन में होता हैं वेसे भी आज इन्टरनेट के जमाने में जी रहे हैं

आज हम मन्नू जी को देख सकते हैं, सुन सकते हैं उन्होने यह सब कैसी स्थिती में लिखा हैं । किस प्रकार की परेशानीयो से गुजर कर आज उन्होनें हिन्दी साहित्य के क्षैत्र में अपना नाम कमाया हैं यह सब हम जान सकते हैं।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व

यह शोद्य कार्य समाज में नारी की समस्या व नारी पुरूष संबंद्यो को उजाकर करकें आज के समय मे आये बदलाव को प्रस्तुत करेगा।

समाज को नवीन ज्ञान एवं गति प्रदान करना ं जीवन की समस्याओं से निजात पाने की उद्देश्य की प्राप्ति का सरल उपाय देना। सुधार में सहायक।

अपने अध्ययन काल में हिन्दी की कई कहानियों से गुजरने का सुअवसर मुझे मिला हैं। अन्य लेखिकाओं के बजाय मन्नू जी की कहानियों के प्रति मेरी विशेष रूचि रहीं हैं। उनकी कुछ कहानियों उपन्यासो नाटकों को पढ़ने पर पता चला कि उनकी कहानियो में समाज की स्थितीयों का वर्णन मिल। नारी, नारी प्रशनों, नारी व पुरूषो के बिच संम्बन्ध, घर परिवार व समाज में नारी कि स्थिति घर परिवार की समस्यॉ, युग जीवन की परेशानीया, व्यक्ति व समाज के रिस्ते, नारी मन व सामाजिक जटिलताओं कों लेकर आद्युनिक मन और संवेदना के गहरे मानवीय आशओ के साथ मन्नू जी ने कहानीयों की रचंना की हैं।

मेरे इस शोद्यकार्य से मन्नू जी के साहित्य के प्रती रूची रखने वाले सभी पाठको को इस मेरे शोद्यकार्य से तमाम उनकी नारी के प्रती हो रहे कार्य, उनका समाज में स्थान अर्थात सभी समस्याओं का समाधान मिले यही मेरा लक्ष्य हैं। और मेने अपने शोद्य कार्य का विषय चुना हैं।

''मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य में नारी की वास्तविकता का अध्ययन''

साहित्य की समीक्षा

पूर्व में मन्नू भण्डारी पर किये गये अध्ययनों का पुनरावलोकन

राजेन्द्र यादव (2007) ''आदमी कि निगाह मे औरत''

यह किताब पिछले चार – पॉच सालो में विभिन विचारो तेजक मसालों पर स्त्रियो के पक्ष में दी गई दलीलो के साथ – 2 उन जटीलताओ की ओर भी इशारा करती हैं । पर हमारा छटीग्रस्त समाज सोच ही नही पाता । यह पुस्तक भारतीय समाज में पुनकत्थानवादी शक्तियों के उभरते दौर में धर्म और नेतीक्ता की आड में सबसे ज्यादा प्रताडित हो रही स्त्री की ऐतीहासिक सुदर्भो में जाच – पडताल करती हैं । और शवी शताब्दी में स्त्री मुक्ति की राह में खडी चुनौतियो सें साक्षात्कार करती हैं ।

सीमा

मन्नू भण्डारी के कहानी साहित्य विधाओं में (कहानी उपन्यास,नाटक, आत्मकथा, संस्मरण, बाल–साहित्य, पटकथा, चल–चित्त) में से केवल कहानी व उपन्यास का अध्ययन किया जायेगा।

व्याप्ति

मन्नू भण्डारी का कृतित्व, व्यक्तित्व एंव अस्तित्व का स्वरूप व पारिवारिक, सामाजिक व आर्थिक स्तर पर मन्नू जी

के साहित्य में नारी अस्तित्व की तलाश, नारी की वास्तविकता की तलाश, नारी के मन की पीड़ा, दाम्पत्य जीवन आदि।

शोध के उद्देश्य

- कहानी विद्या का ऐतिहासिक अध्ययन।
- मन्नू भण्डारी के व्यक्तित्व एंव साहित्य का सूक्ष्मता से अध्ययन।
- मनोविज्ञान का अध्ययन करते हुऐ स्त्री पुरूषों के सम्बन्ध का अध्ययन (नारी की व्यथा, नारी शोषण, नारी का अस्तित्व, नारी का समाज मे स्थान)
- मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य की भाषागत उद्वेश्य का अध्ययन।

निष्कर्ष

आद्युनिक काल विशेषकर साठोतर काल में हिन्दी साहित्य के कहानियों पर अनेक शोद्यार्थियों ने शोद्य किया हैं।

हिन्दी साहित्य एक सश्क्त विद्या हैं कहानी जिवन के हर पहलू को चित्रित करने वाली कहानी साहित्य का अपना ही महत्व हैं। कहानी साहित्य में मनोवैज्ञानिक तत्वों का समावेश प्रेंमचंद जी की कहानीयो मे दिखाई देता है इस युग के सभी कहानीयों मे प्रायः नारी मनौविज्ञान का प्रभाव स्पष्ट होता है।

फ्राइड युग एडलर आदि मनौविज्ञान का प्रभाव दिखाई देता है इन सब के आधार पर मनो वैज्ञानीक के तत्वो के आधार बनाकर नारी मन को टटोलने में जैनेन्द्र, अज्ञेय, इलाचंद्र, जोशी उषा प्रियवंदा, राजेन्द्र यादव, मन्नू भण्डारी आदि का प्रमुख स्थान हैं।

इन्ही कहानीकारो में मन्नू भण्डारी का स्थान समानीय है।

हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ नारी कहानीकारो मे मन्नू भण्डारी जी का जन्म रूढिग्रस्त मारवाडी परिवार मे हुआ। उनका व्यक्तित्व सरल, सहज और विशिष्ट रहा। मन्नू भण्डारी जी ने एक साथ गृह स्वामिनी, लेखिका तथा अध्यापिका के पद को सहारानीय रूप से निभाया। मन्नू भण्डारी जी ने ''मैं हार गई'' से लेकर 'नमक' तक की कहानीयों मे अपना वर्चस्व दिखाया। उनकी कहानीयों आम नारी जीवन की पिड़ा देखने को मिलती है। उनकी कहानीयों में आम नारी के बजाय विशिष्ट वर्ग की नारी को प्रधानता मिली हैं।

***Research Scholar**
Department of Hindi
Jayoti Vidyapeeth Women's University
Jaipur (Raj)

संदर्भ–सूची

1. अरविन्द जैन (2006) ''औरत होने की सजा
2. मरियक्कुटटी टी आई (1997) ''मन्नू भएडारी कथा साहित्य एक'
3. सी एच चारूमति (2007) ''मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य''
4. मिनाक्षी स्वामी (2008) ''अस्मिता कि अग्नि परिक्षा''
5. सुभाष सेतिया (2008) ''स्त्री अस्मिता के प्रश्न''
6. आशा रानी व्होरा (2005) ''औरतः कल आज और कल''